Vol 4 Issue 4 Oct 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-4 | Oct-2014
Available online at www.aygrt.isrj.org

विकासोन्मुख जिला : श्रीगंगानगर

सुनील कुमार वर्मा

सारांश **:-** श्रीगंगानगर राजस्थान का विकासोन्मुख जिला और एक महत्वपूर्ण सीमान्त जिला है। इस नगर की स्थापना बीकानेर रियासत के महाराजा श्रीगंगासिंह जी ने की थी। राज्य के अन्य नगरों की तुलना में यह अति नवीन नगर है, क्योंकि इस जिले का वास्तविक विकास गंगनहर (१९२७) के आगमन के पश्चात् ही सम्भव हो पाया है।

प्रस्तावनाः–

अध्ययन क्षेत्र महान् भारतीय मरूस्थल का एक भाग है। यह मरूस्थल अरावली श्रृंखला के पश्चिम में विस्तृत भू-भाग को घेरे है। मरूस्थलीय भाग विभिन्न आकारों के बालू जमावों द्वारा निर्मित है। यह भाग मरूस्थलीय और अर्द्धमरूस्थलीय है। अध्ययन क्षेत्र में चारों ओर विभिन्न आकार वाले बालुका स्तूपों का विस्तार है। अध्ययन क्षेत्र में इन्दिरा गाँधी नहर और गंगनहर द्वारा सिंचाई सुविधा उपलब्ध होने से कृषि और कृषि आधारित आर्थिक क्रियाओं का विस्तार हुआ है। इससे अध्ययन क्षेत्र के इस मरू भाग में कई नगरीय अभिवृद्धि केन्द्रों का तीव्रता से विकास हुआ है।इस क्षेत्र के विकास को यहाँ के भौगोलिक तथा आर्थिक कारक प्रभावित करते रहे हैं। वर्तमान में भी क्षेत्र के विकास में इन भौगोलिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान है। भौगोलिक तत्वों के अध्ययन के बिना आर्थिक और सामाजिक विकास का कोई भी अध्ययन पूर्ण नहीं होता है।

भौगोलिक स्थिति–

किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने से पूर्व भूगोलवेत्ता उस क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति को जानकर अपने निष्कर्ष तक पहुँच पाता है। भौगोलिक स्थिति एक महत्वपूर्ण तत्व है, जिसका प्रभाव क्षेत्र की जलवायु, निवासियों के क्रिया-कलापों तथा अन्य तत्वों पर पडता है। स्थिति का प्रभाव नगर के सम्पूर्ण विकास एवम् गतिविधियों पर पडता है। अतः यह प्राथमिक भौगोलिक तत्व है। अध्ययन क्षेत्र राजस्थान के उत्तरी भाग में तथा थार मरूस्थल के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। प्रथम अध्याय में अध्ययन क्षेत्र का सीमांकन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र श्रीगंगानगर जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल १११५४.६६ वर्ग किलोमीटर है। यह राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का ३.१९ प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से श्रीगंगानगर जिले का राज्य में १७वां स्थान है। श्रीगंगानगर में कृषि विस्तार में वृद्धि होने से राज्य के आर्थिक विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

अक्षाशीय एवं देशान्तरीय विस्तार

श्रीगंगानगर जिले का विस्तार भारत-पाकिस्तान अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के ७२°३' पूर्वी देशान्तर से जिले की सादुलशहर तहसील के पूर्वी भाग के ७२°३' पूर्वी देशान्तर तक तथा दक्षिण में जिले की घड़साना

तहसील के दक्षिणी भाग की २८°४' उत्तरी अंक्षाश से गंगानगर तहसील के उत्तरी भाग की ३०°६' उत्तरी अक्षांश तक है। जिले के क्षेत्र का सकल अक्षांशीय विस्तार २°२' तथा देशान्तरीय विस्तार ३° है। जिले की तहसीलों के अक्षांशीय एवं देशान्तरीय विस्तार का विवरण सारणी २.१ तथा चित्र २.१ में दर्शाया गया है। श्रीगंगानगर जिला भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रतिनिधि भिन्न १:५०००० पर प्रकाशित धरातल पत्रकों संख्या ४४E/५, ४४H/४, ४४H/७ और ४४E/१ के अन्तर्गत आता है। अक्षांशीय स्थिति के अनुसार यह उपोष्ण प्रदेश में स्थित है।

श्रीगंगानगर जिला : तहसीलों की अवस्थिति एवं भौगोलिक विवरण,वर्ष 2009

Ø-l-	Rkgly	dy {k=Qy ¼ox fdeh-½	v{kk'k ¼mŸkj½	n'kkUrj ¼ioh½	Lken ry l Åpkb ¼eh-½
1-	Xkxkuxj	1006-92	29°92^	73°88^	164
2-	dj.kij	817-57	29°45^	73°27^	&&&
3-	Lkkny'kgj	768-10	29°48^	74°9^	&&&
4-	ineij	847-45	29°35^	73°37^	&&&
5-	jk;flguxj	1319-83	29°30^	73°27^	&&&
6-	vuix<	1150-44	29°10^	73°12^	&&&
7-	?kMlkuk	1589-33	28°57^	73°9^	&&&
8-	fot;uxj	807-13	29°13^	73°30^	&&&
9-	ljrx<	2843-22	29°17^	73°55^	&&&
	Jhxxkuxj ftyk	1154-66	28°4^&30°6^	72°3^&75°3^	164&227
	jktLFkku	11154-66	23°3^&32°12	69°30^&78°17^	

स्त्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर,एवं गर्वनमेट ऑफ इण्डिया (१९८१)

क्षेत्रफल

श्रीगंगानगर जिले में सबसे बड़ी तहसील सूरतगढ़ है। सूरतगढ़ का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल २८४३.२२ वर्ग किलोमीटर है। यह अध्ययन क्षेत्र श्रीगंगानगर जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का २५.४६ प्रतिशत है। घड़साना दूसरी बडी तहसील है, जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल १५८९.३३ वर्ग किलोमीटर है, जो अध्ययन क्षेत्र का १४.२५ प्रतिशत है। अन्य तहसीलों में रायसिंहनगर (१३१९.८३ वर्ग किलोमीटर), अनूपगढ़ (११५५.४४ वर्ग किलोमीटर), गंगानगर (१००६.९२ वर्ग किलोमीटर), पदमपुर (८४७.४५ वर्ग किलोमीटर), करणपुर (८१७.५७ वर्ग), विजयनगर (८०७.१३ वर्ग किलोमीटर) और सादुलशहर (७६८.१० वर्ग किलोमीटर) है। इस तरह अध्ययन क्षेत्र का सकल भौगोलिक क्षेत्रफल १११५४.६६ वर्ग किलोमीटर है।

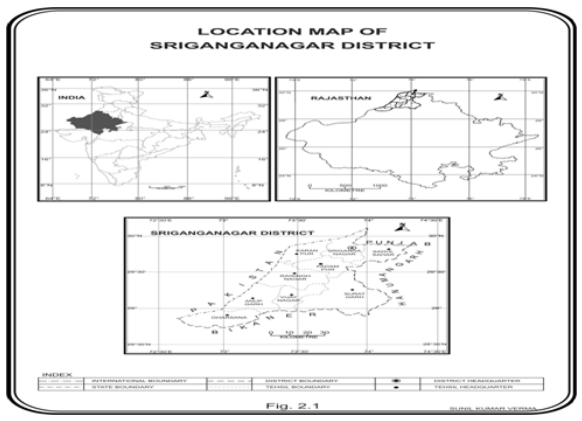

क्षेत्र की सीमाऐं

अध्ययन क्षेत्र का पश्चिमी भाग भारत-पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा द्वारा निर्धारित है। पाकिस्तान से लगती अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर स्थित होने से इसकी स्थिति अति महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि पाकिस्तान से लगती अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा का विस्तार २४० मील लम्बे क्षेत्र में है। इस अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से पाकिस्तान का बहावलपुर जिला लगा हुआ है। जिले की घड़साना, अनूपगढ़, रायसिंहनगर, करणपुर और गंगानगर सीमान्त तहसीलें है। श्रीगंगानगर के उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान का बहावलपुर जिला, उत्तर-पूर्व में पंजाब का फिरोजपुर जिला, पूर्व में हनुमानगढ़ जिले की रावतसर, पीलीबंगा, संगरिया और हनुमानगढ़ तहसीलों द्वारा, दक्षिण में बीकानेर जिले की खाजूवाला, छतरगढ़ और लूणकरणसर तहसीलें हैं। श्रीगंगानगर जिले की भौगोलिक स्थिति चित्र २.२ से स्पष्ट है।

प्रशासनिक ढ़ाँचा

प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र नौ तहसीलों में विभक्त है। ये तहसीलें छः उपखण्डों-गंगानगर (गंगानगर व सादुलशहर तहसील), करणपुर (करणपुर व पदमपुर तहसील), रायसिंहनगर (रायसिंहनगर व विजयनगर तहसील), सूरतगढ़ (सूरतगढ़ तहसील), अनूपगढ़ (अनूपगढ़ तहसील) और घड़साना (घड़साना तहसील) के अन्तर्गत आती हैं (चित्र २.२)।श्रीगंगानगर जिले में गांवों की कुल संख्या ३०१४ है। इनमें से २८३० आबाद और १८४ गैर आबाद गाँव हैं। सर्वाधिक आबाद गाँव सूरतगढ़ व घड़साना तहसील में और न्यूनतम आबाद गाँव सादुलशहर तहसील (१९९) के अन्तर्गत है (सारणी २.२)। गंगानगर अध्ययन क्षेत्र का प्रतिनिधि नगर है। नगर की स्थापना से ही ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारणों से इसका विकास हुआ है परन्तु वास्तविक विकास १९२७ में गंग नगर के निर्माण के पश्चात् ही सम्भव हुआ

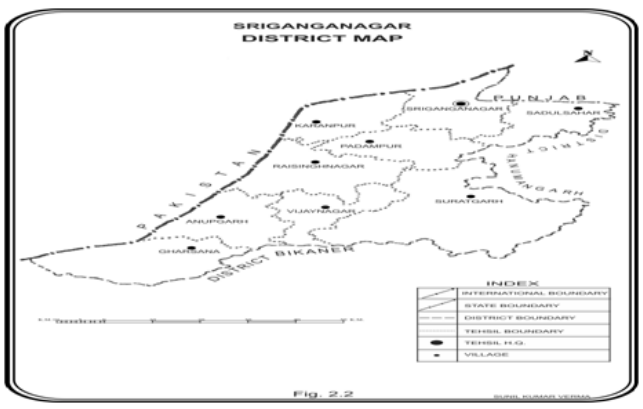

है। यह नगरीय पदानुक्रम की उच्च श्रेणी का नगर है। इसका प्रभाव क्षेत्र न केवल जिला स्तर पर है, बल्कि बीकानेर संभाग के बीकानेर, हनुमानगढ़ एवं चुरू जिलों पर भी हुआ है।

श्रीगंगानगर जिला : प्रशासनिक ढ़ाँचा, वर्ष 2009

mi[k.M	rglh	Ukxj@dLck dh l[;k	Xkkok dh l[;k		
			vkckn	xj vkckn	dy ;kx
xxkuxj	Xkxkuxj	1	295	17	312
	Lkkny'kgj	1	199	14	213
dj.kij	dj.kij	2	207	30	237
	ineij	2	239	8	247
jk;flguxj	jk;flguxj	1	367	40	407
	fot;uxj	1	268	9	277
ljrx<	ljrx<	2	433	34	467
vuix<	vuix<	1	397	26	423
?kMlkuk	?kMlkuk	1	425	6	431
	;kx	12	2830	184	3014

स्त्रोतः सोसियो इकोनोमिक स्टेटस्टिक्स, २००७-०८, राजस्थान आर्थिक और सांख्यिकीय निदेशालय, योजना भवन, जयपुर, जनवरी २००६ एवं कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.) श्रीगंगानगर।

धरातलीय स्वरूप

धरातल की दशाऐं नगर के विकास विस्तार आदि को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। आर्थिक विकास का क्षेत्र के साथ सम्बन्ध धरातलीय दशाओं द्वारा नियंत्रित होता है। यदि धरातल समतल होगा तो नगर का सम्बन्ध समीपवर्ती क्षेत्र से अत्यधिक होगा, दूसरी ओर यदि धरातल मे अत्यधिक विषमताएं होंगी तो इस सम्बन्ध में जटिलता आ जाती है।

श्रीगंगानगर जिला समतल धरातलीय स्वरूप रखता है। मरूभूमि होने के कारण चारों ओर विविध आकार के बालुकास्तूप विस्तृत रूप से फैले हुए हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा मे 'धौरे' कहा जाता है। इन स्तूपों की सर्वाधिक मात्रा जिले के पश्चिमी व दक्षिणी भाग में है। सामान्यतः स्तूप पवनानुवर्ती हैं। क्षेत्र में इनकी दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है। इस क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के फलस्वरूप यहाँ की पारिस्थितिकी में परिवर्तन आया है तथा इसका अधिकांश भाग कृषि क्षेत्र में बदल गया है। यहाँ महत्वपूर्ण चट्टानी संरचना यथा पठार, पर्वत तथा झील का अभाव हैं।

अध्ययन क्षेत्र की सामान्य भूदृश्यावली समतल मैदान के रूप में दृष्टिगोचर होती है। यहाँ कोई भी विशिष्ट पहाड़ी नहीं है। श्रीगंगानगर में समुद्रतल से औसत ऊँचाई का परिसर १६४ से २२७ मीटर है। धरातलीय ढ़ाल में स्थानीय भिन्नताऐं कम पायी जाती हैं। धरातल का ढ़ाल क्रमशः उत्तर से दक्षिण की ओर है। इस क्षेत्र के मध्य से घग्घर नदी प्रवाहित होती है किन्तु यह मात्र भूमि पर अंकित प्रवाह का तल है, जिसमें वर्षा काल में बाढ़ आ जाती है। घग्घर नदी प्राचीन सरस्वती नदी की अवशिष्ट मानी जाती है जिसे मृत नदी की संज्ञा दी जाती है। घग्घर नदी के ढ़ाल अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ है। घग्घर नदी के क्षेत्र में न्यूनतम ऊँचाई है। इस प्रकार श्रीगंगानगर जिले का अधिकांश भाग १५० से २५० मीटर की समोच्च रेखा द्वारा घिरा है। जिले में बालू जमावों की सघनता दक्षिणी-पश्चिमी भाग पर सर्वाधिक है (चित्र २.३)।

श्रीगंगानगर जिला भूगर्भिक दृष्टि से नागौर-गंगानगर बेसिन का भाग है। इस का विकास प्रीकेम्ब्रियन से पूर्व की उत्तर दिल्ली पर्वत निर्माण क्रिया से सम्बन्धित है। यह भूगर्भिक क्रिया ७४५० लाख से ६००० लाख वर्ष पूर्व हुई थी और प्रारम्भिक केम्ब्रियन काल में नागौर समूह की चट्टानों के जमाव के साथ पूर्ण हुई। अध्ययन क्षेत्र में ये प्रोटेरोजोडक-इओकेम्ब्रियन जमाव विस्तृत रूप में वायु विक्षेप की मोटी परत से ढ़के हैं।

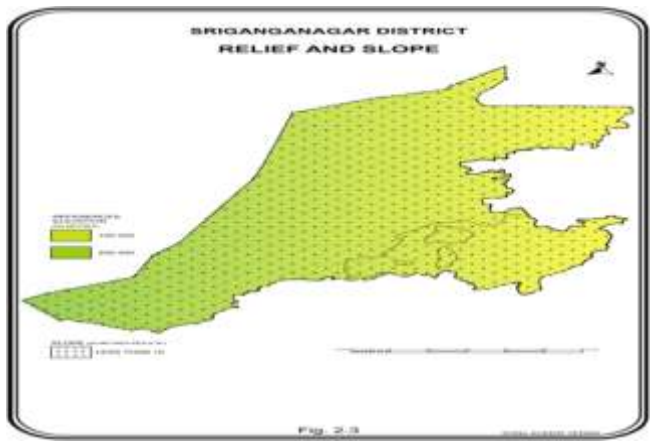

जलवायु

किसी भी प्रदेश के अध्ययन में वहाँ की जलवायु विशेष महत्व रखती है, क्योंकि जलवायु न केवल कृषि की उपज को ही प्रभावित करती है, वरन मानव के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को भी नियंत्रित करती है। वातावरण का कोई भाग मनुष्य पर इतना प्रभाव नहीं डालता जितना कि जलवायु।

श्रीगंगानगर जिला महान् भारतीय मरूस्थल के शुष्क प्रदेश के अन्तर्गत आता है। ग्रीष्म कालीन उच्च वाष्पीकरण, धूलभरी आंधियाँ, शुष्क शीत ऋतु आदि अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख जलवायु विशेषताऐं हैं। आर्द्रता की उपलब्धता इस क्षेत्र की प्रमुख समस्या होने के कारण अकाल और सूखा इस जिले की प्रमुख जलवायु समस्याऐं है। शुष्कता जिले की प्रमुख जलवायु विशेषता है। प्राचीन ऐतिहासिक प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में पहले सरस्वती नदी प्रवाहित होती थी। उस समय यहाँ की जलवायु नम थी। उसके पश्चात् इस क्षेत्र में शुष्कता का विस्तार होता गया। परिणामस्वरूप यह क्षेत्र महान् थार मरूस्थल में परिवर्तित हो गया। वर्तमान समय में यहाँ मरूस्थलीय जलवायु की विशेषताऐं मिलती है।

अध्ययन क्षेत्र यद्यपि अक्षांशीय दृष्टि से उपोष्ण प्रदेश में स्थित है, किन्तु यहाँ की जलवायु भी सम्पूर्ण भारत की जलवायु के समान मानसूनी जलवायु है। श्रीगंगानगर जिले के जलवायु आंकड़े अपर्याप्त रूप से उपलब्ध हैं। गंगानगर जिले का प्रतिनिधि मौसम विज्ञान केन्द्र है। तहसील स्तर पर वर्षामापी स्टेशन होने से वर्षा के आंकड़े तो उपलब्ध है, लेकिन अन्य जलवायु तत्व जैसे तापमान, वायुदाब, वायु दिशा आदि का न तो अंकन किया जाता है न ही संधारण या रिपोर्ट किये जाते हैं। अधिकांश उपलब्ध आंकड़े स्टीवेन्शन स्क्रीन पर लिये गये व्यष्टि जलवायु को ही प्रदर्शित करते हैं। यहाँ की जलवायु का अध्ययन तापमान, वर्षा, सापेक्षिक आर्द्रता, हवाऐं, वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन तथा कई अन्य महत्वपूर्ण तत्वों के आधार पर किया जाता है।

तापमान

तापमान वायुमण्डलीय परिसंचरण को निश्चित करने वाला प्रमुख तत्व है। श्रीगंगानगर जिले में तापमान ऊँचे तथा विश्व के अन्य शुष्क और अर्द्धशुष्क प्रदेशों की तरह विषम पाये जाते हैं। श्रीगंगानगर की तापमान दशाऐं मरूस्थलीय जलवायु की तापमान की दशाओं के समान हैं, अर्थात यहाँ ग्रीष्म काल में अति उच्च तापमान और शीत काल में अति निम्न तापमान होता है। स्वच्छ आकाश और निम्न आर्द्रता तथा अधिकतम सूर्याभिपात के प्रवेश से धरातलीय उष्णता अधिक होती है। तापमान का तीव्रता से ह्रास होता है। परिणामस्वरूप दैनिक तापान्तर उच्च पाया जाता है।

श्रीगंगानगर जिलें में शीत ऋतु स्वच्छ आकाश, निम्न आर्द्रता, उच्च दैनिक तापान्तर और हल्की उत्तरी-पूर्वी हवाओं से सम्बन्धित है। इस ऋतु में कई बार तापमान हिमांक से नीचे पहुँच जाता है। दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह तथा जनवरी सर्वाधिक ठण्डा माह है। इस क्षेत्र में पाला पड़ने की प्रवृत्ति

सामान्यतया तीन वर्षों में एक बार होती है, तथा इसकी अवधि ५ से १० दिन होती है। यह क्रिया पश्चिमी विक्षोभों से सम्बन्धित है। इस समय का औसत दैनिक तापान्तर १२० से १६० सेल्सियस तक पाया जाता है।

ग्रीष्म ऋतु उष्ण और शुष्क होती है। दिन अधिक उष्ण होते हैं तथा तीक्ष्ण धूप होती है। २१ मार्च के बाद सूर्य की उत्तरायण स्थिति के साथ तापमान में तीव्रता से वृद्धि होती है। दैनिक उच्चतम तापमान मई व जून माह में कई बार ५०० सेल्सियस तक पहुँच जाता है। इस ऋतु में औसत अधिकतम तापमान ३२० से ४४० सेल्सियस पाया जाता है। मई-जून ऊष्णतम माह है।

जून के अन्तिम सप्ताह से जुलाई का प्रथम सप्ताह अध्ययन क्षेत्र में मानसून सम्भावित समय है। वर्षा के आगमन के साथ तापमान ४४०-४५० सेल्सियस से ३६० से ३८० सेल्सियस हो जाता है। इस ऋतु में दैनिक तापान्तर न्यूनतम होता है।

दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के पीछे लौटने के साथ सितम्बर-अक्टूबर में अध्ययन क्षेत्र में स्वच्छ आकाश से तापमान में पुनः वृद्धि होती है। अक्टूबर के अन्त तक उष्ण दशाऐं बनी रहती हैं, लेकिन इसके पश्चात् क्षेत्र में प्रतिचक्रवातीय वायु संचरण स्थापित हो जाता है। इस समय अधिकतम तापमान ३२० से ३८० सेल्सियस के मध्य पाये जाते हैं, लेकिन दैनिक तापान्तर १४० से १८० सेल्सियस हो जाता है।

औसत मासिक तापमान

गंगानगर अध्ययन क्षेत्र का प्रतिनिधि मौसम विज्ञान केन्द्र है। अतः जिले के तापमान के अध्ययन के लिए गंगानगर के तापमान को लिया गया है (सारणी २.३)। प्रादेशिक स्तर पर प्राप्त तापमान संमकों के आधार पर जिले का समताप रेखा मानचित्र बनाया गया है(चित्र २.४)।

गंगानगर शहरः औसत मासिक और वार्षिक तापमान (डिग्री सेल्सियस)

Ekkg	vkl r ekieku				
	2004	2005	2006	2007	2008
Tkuojh	14-3	13-5	13-9	14-0	13-8
Qjojh	18-1	18-4	18-1	16-0	16-2
ekp	22-8	21-7	21-5	22-1	21-9
viy	31-5	31-3	31-7	31-4	31-0
eb	36-5	36-6	36-2	36-7	35-9
tu	36-3	35-9	36-1	35-8	36-0
tykb	35-6	35-2	35-5	34-7	36-1
vxLr	33-9	34-0	33-8	34-2	34-1
flrEcj	31-7	32-1	33-0	32-8	32-9
vDVcj	29-4	29-8	28-9	29-2	29-5
uoEcj	23-4	23-7	22-5	22-8	23-2
fnlEcj	15-8	15-6	16-5	16-3	16-1
Okkf"kd	27-44	27-32	27-3	27-17	27-22

स्त्रोत : मौसम विज्ञान केन्द्र, गंगानगर

जनवरी माह में अध्ययन क्षेत्र में औसत तापमान १२° से १४° सेल्सियस पाया जाता है। गंगानगर तहसील के उत्तरी भाग में तापमान १२° सेल्सियस से कम तथा जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग (सूरतगढ़ तहसील) में १४° सेल्सियस से अधिक पाया जाता है। औसत तापमान में यह भिन्नता स्थानिक कारणों से है।

अप्रैल में उष्णता में वृद्धि होने से तापमान में तीव्रता सें वृद्धि होती है। मई-जून में सर्वाधिक तापमान जिले के पश्चिमी भाग में रहता है। ४०० सेल्सियस से अधिक तापमान जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में पाया जाता है। इस अवधि में सम्पूर्ण जिले में औसत मासिक तापमान ३६० से ४०० सेल्सियस

पाया जाता है। तीक्ष्ण धूप और उच्च तापमान ग्रीष्म काल की विशेषताएं है। उच्च तापमान से उष्ण हवाऐं प्रवाहित होती हैं तथा धूलभरी आंधियाँ चलती हैं।

औसत मासिक न्यूनतम और अधिकतम तापमान

अध्ययन क्षेत्र में औसत मासिक न्यूनतम तापमान में वृद्धि जनवरी में आरम्भ होती है तथा जून माह में यह उच्चतम होता है। इसके पश्चात् न्यूनतम तापमान में दिसम्बर माह तक गिरावट होती है। जनवरी माह में न्यूनतम औसत मासिक तापमान ४० सेल्सियस रहता है।सारणी २.४ तथा चित्र २.५ अध्ययन क्षेत्र में औसत मासिक न्यूनतम और अधिकतम तापमान को दृष्टिगोचर करते हैं। श्रीगंगानगर क्षेत्र में औसत अधिकतम तापमान का परिसर ४०० से ४८० सेल्सियस पाया जाता है। जनवरी माह में औसत अधिकतम तापमान अपेक्षाकृत निम्न होता है।

REFERENCES

1.Socio-Economic Statistics, 2008-09, Rajasthan, Economic & Statistics Directorate, Planning Building Jaipur, 2009 of Office District Collector, Sriganganagar
2.Outline Regional Plan, 2001, Indira Gandhi Canal Region, Town Planning Department, Govt. of Rajasthan, Jaipur
3.Singh, R.N. & Sahab Deen (1976), A Functional Typology of Urban Centers of Eastern Uttar Pradesh (India), National Geographer, Vol. II
4.Singh R.L. (1968), India : A Regional Geography, NGSI, Varanasi
5.Ahlman, H.W. (1928), The Geographical Study of Settlements, Geographical Review, Vol. 18
6.Alam, S.M. (1965), Hyderbad-Secunderabad - A Study in Urban Geography, Allied Publishers, Bombay.
7.Aurousseau, M. (1924), Recent Contributions to Urban Geography, Geographical Review, Vol. 14

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org